09/07/2020

PHILOSOPHY (Sub./Hon)

Nature of Ethic

Ajai kumar
Assistant pro
fessor
C.M.J college

नीतिशास्त्र का स्वरूप

नीतिशास्त्र के स्वरूप का प्रश्न सदा ही विवादास्पद है। विवाद का प्रमुख कारण यह है कि इसके स्वरूप के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न विद्वानों के मत भिन्न भिन्न हैं। प्राच्य और पाश्चात्य सभी विचारकों ने नीतिशास्त्र के स्वरूप और सीमा या क्षेत्र पर अपने अपने ढंग से विचार किया है। सभी के विचार सुन्दर हैं परन्तु किन्हीं दो के विचारों में पूरी समानता नहीं है। ~~इसकी~~ यही कारण है कि नीतिशास्त्र का स्वरूप ~~क्षेत्र~~ दर्शन शास्त्र के समान विवादों का अखाड़ा बन गया है। हमें इन विवादों में न पड़कर एक सही, सरल और सुगम मार्ग को अपनाना चाहिए यह व्यावहारिक मार्ग है।

ऐतिहासिक दृष्टि से शास्त्रों के स्वरूप के सम्बन्ध में जो विवाद होना स्वाभाविक है परन्तु यदि शास्त्र के स्वरूप को व्यावहारिक पक्ष को ले तो यह कठिनाई दूर हो सकती है व्यावहा एक दृष्टिकोण तो यह है कि किसी भी शास्त्र के स्वरूप निर्धारण के लिए यह आवश्यक है कि पहले हम यह विचार करें कि उस शास्त्र की व्यावहारिक समस्याएं क्या है तात्पर्य यह है कि किसी शास्त्र की समस्याओं पर यदि हम ध्यान दें तो हमें उस शास्त्र का स्वरूप भी स्पष्ट हो जायेगा पर ध्यान देना होगा जिस प्रकार धार्मिक समस्या को जाने बिना हम धर्मशास्त्र के स्वरूप को नहीं समझ सकते दार्शनिक समस्याओं से अवगत हुए बिना दर्शनशास्त्र के स्वरूप को नहीं समझ सकते।